कृषि एवं पर्यावरण भूगोल

(सिरसा जिले का विश्लेषणात्मक अध्ययन)

कृषि एवं पर्यावरण भूगोल

(सिरसा जिले का विश्लेषणात्मक अध्ययन)

डॉ. जितेन्द्र

2023

सिद्धि विनायक पब्लिकेशन्स

प्रकाशक

सिद्धि विनायक पब्लिकेशन्स
कुलचन्द्र, हनुमानगढ (राज) 335526
94611-09470, 83063-09470
publicationssiddhivinayak@gmail.com

ISBN : 978-81-965118-2-1

© सर्वाधिकार सुरक्षित

प्रथम संस्करण (2023)

मूल्य : ₹ 1580.00

शब्द संयोजक एवं डिजाइन : कमल जीत सिंह (तकनीकी सहायक)

मुद्रक : जैन ऑफसैट प्रिण्टर्स, संगरिया

वैधानिक चेतावनी

- इस पुस्तक में प्रकाशित सूचनाएँ, समाचार, ज्ञान एवं तथ्य पूरी तरह से सत्यापित किए गए हैं। फिर भी, कोई जानकारी या तथ्य गलत प्रकाशित हो गया हो तो प्रकाशक, संपादक या मुद्रक उससे किसी व्यक्ति विशेष या संस्था को पहुँची क्षति के लिये जिम्मेदार नहीं है।
- हम विश्वास करते हैं कि इस पुस्तक में छपी सामग्री लेखक द्वारा मौलिक रूप से लिखी गई है। अगर कॉपीराइट उल्लंघन का कोई मामला सामने आता है तो प्रकाशक को जिम्मेदार नहीं ठहराया जायेगा। किसी भी प्रकार के विवाद के लिए न्याय क्षेत्र हनुमानगढ, राजस्थान होगा।
- पुस्तक में प्रकाशित तथ्यों अथवा विवरण में रह गयी किसी भी कमी अथवा त्रुटि के कारित क्षति अथवा संताप के लिए लेखक, प्रकाशक, मुद्रक अथवा विक्रेता का कोई दायित्व नहीं है।
- इस पुस्तक का प्रकाशक की लिखित अनुमति के बिना पुनः प्रकाशन/फोटो कॉपी/स्कैन इत्यादि माध्यमों से पुनर्मुद्रण करना कॉपीराइट अधिनियम के अनुसार दंडनीय अपराध है।

S.N.	शीर्षक	Pages
	भूमिका	(ix)–(x)
1.	**कृषि एवं पर्यावरण : एक सैद्धांतिक विश्लेषण**	**1–11**
	कृषि : परिभाषा एवं अर्थ	1
	कृषि–भूगोल की प्रकृति	2
	कृषि भूगोल : ऐतिहासिक संदर्भ	4
	भूगोल में पर्यावरण अध्ययन की प्रासंगिकता	7
	पर्यावरण की परिभाषा	8
	पर्यावरण के घटक	9
	पर्यावरण के साथ कृषि की अंतः क्रिया	10
2.	**कृषि एवं पर्यावरण : एक भौगोलिक अध्ययन**	**12–44**
	स्थिति और विस्तार	12
	धरातलीय स्वरूप	14
	अपवाह तंत्र	16
	मिट्टियाँ	18
	जलवायु	21
	सिंचाई	25
	परिवहन एवं संचार	34
	प्राकृतिक वनस्पति	36
	वन्यजीव अभयारण्य	40
	धार्मिक एवं अन्य पर्यटन स्थल	41
3.	**जनसंख्या संरचना**	**45–76**
	मानव संसाधन	45
	जनसंख्या प्रारूप	46
	जनसंख्या वितरण	48
	जनसंख्या घनत्व	51
	लिंगानुपात	57
	साक्षरता	60

	अनुसूचित जाति एवं जनजाति	63
	कार्यशील जनसंख्या	64
	व्यवसायिक संरचना	66
	जनसंख्या की धार्मिक संरचना	70
	जनसंख्या वृद्धि का नगरों पर प्रभाव	72
	ग्रामीण जनसंख्या वृद्धि का कृषि पर प्रभाव	74
4.	**सामान्य भूमि उपयोग व शस्य गहनता**	**77–115**
	भूमि उपयोग	79
	जिले में तहसीलवार भूमि उपयोग का वितरण	90
	जिले में भूमि उपयोग में परिवर्तन	92
	भूमि उपयोग की प्रमुख विशेषताएँ	95
	शस्य गहनता	96
	शस्य विविधता	104
	शस्य विविधता में परिवर्तन	110
	शस्य विविधता की प्रमुख विशेषताएँ	111
	मिश्रित कृषि प्रणाली	112
	पशुपालन की विशेषताएँ	114
	मत्स्य पालन	115
5.	**कृषि फसलों का प्रारूप व प्रतिरूप**	**116–154**
	कृषि प्रतिरूप	117
	फसलों का वितरण	122
	फसलों का उत्पादन	148
	सिंचाई गहनता	149
	सिंचाई के साधन	150
	कृषि को प्रभावित करने वाले कारक	152
6.	**कृषि आधुनिकीकरण एवं यंत्रीकरण**	**155–194**
	कृषि आधुनिकीकरण का स्तर	157
	कृषि आधुनिकीकरण के स्तर में परिवर्तन	161

	आधुनिकीकरण के प्रमुख तत्त्व	164
	कृषि यंत्रों व उपकरणों का प्रादेशिक वितरण	166
	कृषि यंत्रों के निवेश में परिवर्तन	168
	रासायनिक उर्वरकों व कीटनाशकों का प्रयोग	168
	रासायनिक उर्वरकों के प्रयोग का प्रादेशिक वितरण	170
	रासायनिक उर्वरकों के निवेश में परिवर्तन	172
	कीटनाशकों के निवेश में परिवर्तन	174
	उन्नत बीजों का प्रयोग व निवेश	174
	उन्नत बीजों के निवेश क्षेत्र में परिवर्तन	178
	आधुनिक सिंचाई साधनों का वितरण व निवेश	180
	सिंचाई के आधुनिक साधनों के वितरण में परिवर्तन	184
	जैविक खाद का प्रयोग	185
	कृषि आधुनिकीकरण के प्रभाव	185
	कृषि विकास की अवधारणा	187
	कृषि विकास प्रदेश	193
7.	**आधुनिक कृषि का पर्यावरण पर प्रभाव**	**195–221**
	पर्यावरण अवनयन	198
	पर्यावरण प्रदूषण	199
	प्राकृतिक वनस्पति का विवरण	204
	कृषि आधुनिकीकरण का वनों पर प्रभाव	206
	कृषि आधुनिकीकरण व मृदा प्रदूषण	207
	मृदा प्रदूषण	208
	कृषि आधुनिकीकरण का मृदा पर प्रभाव	211
	कृषि आधुनिकीकरण एवं वायु प्रदूषण	214
	कृषि आधुनिकीकरण एवं पर्यावरण अवनयन	218
	आधुनिक उच्च प्रौद्योगिकी तथा पर्यावरण अवनयन	220

भूमिका

वर्तमान समय में कृषि एवं पर्यावरण शोध व अनुसंधान योग्य ज्वलंत अथवा मुख्य विषय बना हुआ है तथा भारत जैसे कृषि प्रधान देश में जनसंख्या के एक बड़े भाग की आवश्यकताओं की पूर्ति एवं आर्थिक स्थिति को प्रबल व मजबूत करने में कृषि का अहम योगदान है तथा आधुनिक युग में विज्ञान एवं प्रौद्योगिकी के विस्तार व नवीन अनुवेंषणों से कृषि क्षेत्र भी अछूता नहीं रहा है। जिस कारण कृषि में आधुनिकीकरण का प्रसार व महत्व दिन प्रतिदिन बढ़ता जा रहा है। तथा कृषि मानव के मुख्य आर्थिक व्यवसाय में परिवर्तित हो रही है। फलस्वरुप कृषि के प्रति शोधकर्ताओं व वैज्ञानिकों की भी अभिरुचि बढी है परंतु कृषि में आधुनिकीकरण के तीव्र समावेश के परिणामस्वरूप कुछ क्षेत्रीय समस्याओं के साथ–साथ पर्यावरणीय समस्याएं भी तेजी से उभरी हैं क्षेत्र में व्याप्त कृषि आधुनिकीकरण के स्तर व पर्यावरणीय समस्याओं (प्रदूषण) का आंकलन करना व समाधान संबंधी सुझावों को प्रकट करना ही इस पुस्तक की प्राथमिकता रही है।

चयनित क्षेत्र में भौगोलिक व जलवायुगत दशाएँ कृषि के अनुकूल होने के कारण समस्त क्षेत्र में कृषि कार्य सुलभता से किया जाता है तथा क्षेत्र की अर्थव्यवस्था का आधार कृषि ही है। हरित क्रांति के आगमन के पश्चात ही क्षेत्र की कृषि में आधुनिकीकरण का समावेश प्रारंभ हो चुका था तथा वर्तमान समय में कृषि में आधुनिकीकरण चरण स्तर पर है जिस कारण प्रदूषण की समस्याएँ तेजी से प्रसारित हुई हैं जिसका मानव के साथ–साथ पर्यावरण पर भी गंभीर प्रभाव प्रकट हो रहा है। जिसका इस पुस्तक में गहराई से अध्ययन व वर्णन किया है। संपूर्ण पुस्तक को सात अध्याय में वर्णित किया गया है जिनमें क्षेत्र की भौगोलिक संरचना, मानवीय (जनसंख्या) संरचना, क्षेत्र के भूमि उपयोग, शस्य गहनता, शस्य विविधता, सिंचाई गहनता, फसल प्रारूप एवं प्रतिरूप, कृषि में आधुनिकीकरण की गहनता (स्तर), कृषि में आधुनिक कारकों की सहभागिता, क्षेत्र में पर्यावरणीय समस्याओं (मृदा प्रदूषण,

वायु प्रदूषण) वन विनाश, कृषि आधुनिकीकरण के प्रभावों आदि सभी मुख्य विषयों का गहन अध्ययन एवं विश्लेषण किया गया है इन सभी विषयों के साथ ही क्षेत्र में परिवहन, संचार, शिक्षा, व्यवसायिक संरचना जैसे पहलुओं को भी उल्लेखित किया गया है।

पुस्तक कार्य में यथावश्यक मार्गदर्शन, सुझाव एवं सहयोग देने का कार्य मेरे गुरुदेव डॉ. दिनेश कुमार, सहायक आचार्य (भूगोल), टांटिया विश्वविद्यालय, श्रीगंगानगर ने किया है। उनका अपार स्नेह सद्प्रेरणा और सौजन्य मेरी पुस्तक के प्रबंध का आधार है। उनके विद्वता पूर्ण निर्देशन से ही पुस्तक के विषय को अभिव्यक्ति, सार्थकता, विश्वसनीयता तथा स्पष्टता प्राप्त हो सकी है।

इस पुस्तक का प्रकाशन विद्यार्थी एवं शोधार्थी को ध्यान में रखते हुए लिखा गया है। इस पुस्तक में बड़े ही सहज एवं सरल शब्दों का प्रयोग किया गया है। अतः हम आशा करते हैं कि पाठक इस पुस्तक का अध्ययन कर लाभ प्राप्त करेंगे।

इस पुस्तक को वर्तमान रूप देने के लिए 'सिद्धि विनायक पब्लिकेशन्स' का अथाह परिश्रम व समर्पण अत्यंत महत्त्वपूर्ण रहा जिसके लिए औपचारिक धन्यवाद अपर्याप्त होगा।

दिनांक *डॉ. जितेंद्र*